Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

गुरमत संगीताचार्य भाई मरदाना जी

BALDEEP KAUR

Research Scholar, Dept. of Music and Peforming Arts, University of Allahabad, Uttar Pradesh
Supervisor: Prof. Prem Kumar Mallick

सार

गुरमत संगीत के महान संगीतकार रबाबी सिख धर्म के संस्थापक कलयुग के अवतार श्री गुरु नानक देव जी के बचपन के मित्र, शिष्य भाई मरदाना जी का जन्म 1459 ई० में पाकिस्तान के तलवंडी (ननकाना साहिब) में हुआ। मरदाना जी के पिता का नाम बदरो (बदरा) तथा माता का नाम लख्खो था। गुरु नानक देव जी बाल्यावस्था में ही पड़ोस में रहने वाले मरदाना जी के घर जाकर उनकी रबाब सुनते। मां द्वारा मरदाना जी को मरजाना संबोधित करने पर गुरु नानक देव जी ने कहा, मां इसे मरजाना न कहा करो यह तो मरदाना है मरेगा नहीं। गुरु नानक देव जी ने मरदाना जी को अपने शिष्य फरिंदा द्वारा भेंट की गई रबाब दी तथा रबाब बजाने की शिक्षा देकर रबाब वादन में निपुण किया। गुरमत संगीत की नींव की ईंट माने जाने वाले मरदाना जी गृहस्थी थे। इनकी पत्नी का नाम बीबी रखी था और सजादा और रजादा नाम के 2 पुत्र थे। इस महान संगीतकार ने गुरु नानक देव जी की चार यात्राओं के दौरान ही अफगानिस्तान में अपने गुरु की गोद में अंतिम सांस ली। मरदाना जी गुरबाणी रचयिता भी थे। मरदाना जी की बाणी (शबद) गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित है।

मुख्य बिन्दु :- जन्म, रबाबी, मिरासी, गुरबाणी, गृहस्थी, फरिंदा।

भूमिका

सिख धर्म के संस्थापक, प्रथम गुरु, गुरु नानक देव जी एक महान संगीतकार थे। गुरु नानक देव जी ने राग तथा लयबद्ध कीर्तन के माध्यम से ईश उपासना को जहां महत्व प्रदान किया वहीं अपने कीर्तन संगीत में रबाब जैसे श्रेष्ठ वाद्य को चुना।

"रबाबु पखावज ताल घुंघरू अनहद सबदु वजावै।।"

गुरमत संगीत में रबाब वाद्य का स्थान सर्वोपरि है और रबाब वाद्य को बजाने वाले को गुरमत संगीत में रबाबी शब्द से संबोधित किया जाता है। गुरु नानक देव जी ने रबाब वाद्य को ही पसंद किया और अपने साथ भाई मरदाना जी को जो रबाब बजाने में निपुण थे को चुना जिन्हें गुरमत संगीत का प्रथम रबाबी कहा जाता है।

जन्म- मरदाना जी का जन्म एक मिरासी मुसलमान परिवार में 15वीं शताब्दी के मध्याह्न 1459 ई० में तलवंडी जिला शेखूपुरा जो वर्तमान में पाकिस्तान में है तथा इस स्थान को ननकाना साहिब के नाम से भी जाना जाता है, में हुआ। मरदाना जी के पिता का नाम बदरो एवं माता का नाम लख्खो था। कुछ विद्वान पिता का नाम बदरे अथवा बदरा लिखते हैं। एक विद्वान का मत है कि "मान्यताओं के अनुसार मरदाना का जन्म सन 1459 ई० में राय भोए की तलवंडी (जो आज ननकाना साहिब के नाम से प्रसिद्ध है) में हुआ।"

मरदाना जी की गुरु नानक देव जी से भेंट:- गुरु नानक देव जी और मरदाना जी की प्रथम भेंट को एक ऐतिहासिक घटना कहा जा सकता है। गुरु नानक देव जी के दादा जी शिवनारायण जठेरे गांव के निवासी को उनके मित्र रायबुलार जो तत् समय तलवंडी में 1500 मुरबा भूमि के मालिक थे, ने शिवनारायण को तलवंडी में आकर बसने हेतु कहा जो परिवार सहित तलवंडी आ गए। इनके साथ ही इनके खानदानी डूम मीर बदरा (मरदाना जी के पिता जी) भी तलवंडी आ गए और कालू के घर के पास ही रहने लगे। रायबुलार ने शिव नारायण के पुत्र कालू जी (गुरु नानक देव जी के पिता) को अपनी जागीर का पटवारी नियुक्त किया।

गुरु नानक देव जी का प्रकाश 1469 ई० में तलवंडी में हुआ। गुरु नानक देव जी के पिता का नाम कालू मेहता और माता जी का नाम तृप्ता था। जब कालू पटवारी जी के यहां पुत्र के जन्म की खबर गांव वालों को मिली तो वे बधाई देने के लिए कालू जी के घर

पहुंचे। उस समय मीर बदरा जो जाति का मिरासी था तथा संगीत का प्रेमी था, भी अपने पुत्र मरदाना को साथ लेकर कालू जी के घर पहुंचा और ढपली बजा कर बधाई गाने लगा। मरदाना नवागत शिशु गुरु नानक देव जी को देखने घर के अंदर चला गया और बच्चे को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। मरदाना को क्या मालूम था कि यही बच्चा नानक बनकर उसको अपना साथी बनाएगा और रबाब संगीत की विद्यामयी बख्शीश एवं रबाबी की उपाधि से अलंकृत करेगा।

मरजाना से मरदाना बनाना:- मरदाना जी का घर गुरु नानक जी के घर के समीप था। जब बालक गुरु नानक देव जी चलने लगे तो घर के बाहर निकल जाया करते थे और अकसर मरदाने के घर चले जाते थे। एक दिन गुरु नानक देव जी की माता तृप्ता जी ने मरदाना को कहा कि मरदानया नानक तेरा छोटा भाई है इसका ध्यान रखा कर। गुरु नानक देव जी मरदाने के घर जाकर मरदाने की रबाब की धुन को घंटों बैठकर सुनते थे। एक दिन मरदाना जी की मां ने मरदाना से कहा, मरजानया गुरु नानक को घर छोड़ आओ इसकी माता जी इसकी प्रतीक्षा कर रहीं होगी। गुरु नानक देव जी ने कहा मां इनको मरजानया क्यों कहती हैं। वास्तविकता यह है कि मरदाने के पूर्व मरदाना जी के कई भाई बहन पैदा हुए जिनकी मृत्यु हो चुकी थी। अतः इनका नाम बचपन से ही मरजानया रख दिया गया गुरु नानक देव जी को यह नाम सुनकर बहुत आश्चर्य हुआ और मरदाने की मां से कहा मां इसको मरजानया न कहा करो यह तो मरदाना है। इस प्रकार गुरु नानक देव जी ने मरजाना को मरदाना की संज्ञा देकर संबोधित किया।

भाई वीर सिंह जी ने के अनुसार, "गुरु जी को इस विचित्र नाम से आश्चर्य हुआ और उन्होंने आशीर्वाद दिया कि यह मरेगा नहीं और मरजाना का परिवर्तित रुप मरदाना (मरदा+न अर्थात् नहीं मरता) कर दिया और उसी समय से मरजाना मरदाना हो गए।"

मरदाना को गुरु नानक देव जी ने अपना मित्र क्यों बनाया:- मरदाना जी डूम जाति के मिरासी थे जिन्हें नीच जाति का कहा जाता था को गुरु नानक देव जी ने अपना मित्र बनाया। एक आदर्शात्मक जीवन के आधार पर सिख धर्म की स्थापना करने वाले गुरु नानक देव जी ने नीच जाति के उद्धार हेतु अनेकों प्रयास किए।

गूजरी महला १॥

ऐ जी ना हम उतम नीच न मधिम हरि सरणागति हरि के लोग ॥ नाम रते केवल बैरागी सोग बिजोग बिसरजित रोग ॥१॥

मानवता का सिद्धांत अपनाने वाले गुरु नानक देव जी ने संसार के लोगों को यह शिक्षा दी कि सभी मानव बराबर हैं कोई ऊंच या नीच नहीं है सब परमेश्वर के बंदे हैं।

प्रभाती महला१॥

जाति जनमु नह पूछीऐ सच घरु लेहु बताइ ॥ सा जाति सा पति है जेहे करम कमाइ ॥

जनम मरन दुखु काटीऐ नानक छूटसि नाइ॥४॥१०॥

मानव जीवन में जो जैसा कर्म करता है उसे जीवन का वैसा ही फल प्राप्त होता है ऊंची जाति में पैदा होने वाला ऊंचा नहीं कहलाता गुरबाणी में भी उल्लेख है:-

वडहंसु महला ३ घरु १

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मनि मैलै सभु किछु मैला तनि धोतै मनु हछा न होइ ॥

इह जगतु भरमि भुलाइआ विरला बूझै कोइ ॥१॥

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

गुरु नानक देव जी ने परमपिता परमात्मा से प्रभु सिमरन एवं गरीबी की दात मांगी क्योंकि गरीबी से विनम्रता भाव उजागर होता है इसी सिद्धांत को अपनाते हुए गुरु नानक देव जी ने गरीब नीच जाति के डूम मिरासी वह भी मुसलमान को अपना मित्र बनाया क्योंकि संगीत के क्षेत्र में वह सबसे धनी व्यक्ति था। संगीत कला रबाब बजाने में सिद्धहस्त था इसलिए गुरु नानक देव जी ने सोचा कि परमपिता का आदेश-नाम सिमरन का प्रचार के लक्ष्य की पूर्ति हेतु लोगों को जागृत करने के लिए कीर्तन का माध्यम ही सर्वोत्तम साधन है जिसमें संगीत भी आवश्यक है। इस उद्देश्य से उन्होंने "कलजुग महि कीरतनु परधाना॥" के सिद्धांत की पूर्ति हेतु संगीत के जानकार मरदाना को अपना पहला सिख, शिक्षार्थी एवं विद्यार्थी बनाया। मरदाना रबाब बजाने में कुशल थे। उनको रबाब संबंधी बारीकियों की जानकारी प्रदान कर गुरु नानक देव जी ने कुशल रबाबी बना दिया। मुसलमान मिरासी नीची जाति वाले मरदाने को अंगीकार करने पर न केवल उसका समाज में सम्मान बढ़ा अपितु संपूर्ण मिरासी जाति का सम्मान बढ़ गया और मरजाना से बना मरदाना अब भाई मरदाना जी के नाम से सम्मान पाने लगे और गुरमत संगीत का संगीताचार्य कहलाने लगा।

"मरदाना जी को रबाब वादन की कला में दक्षता गुरु जी की शिक्षा से प्राप्त हुई।"

मरदाना जी सारा जीवन गुरु नानक देव जी के साथ रहे। सभी यात्राओं में उनका ध्यान गुरु जी के शबद कीर्तन में रहा उन्होंने अपने जीवन में धुन को अपना सहारा बनाया अर्थात् शबद कीर्तन, गुरमत संगीत, प्रभु के चरणों में ध्यान और गुरु जी की शिक्षा ही उनके जीवन का लक्ष्य बन गया और गुरु नानक देव जी की शिक्षा का उन पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह गुरबाणी रचनाकार हो गए और उन्होने परमपिता परमात्मा को प्राप्त कर लिया।

गुरु नानक देव जी जानते थे कि जो गरीब व्यक्ति साथ देगा वह अमीर नहीं इसलिए उन्होंने प्रभु से विनती की कि मेरा साथ नीची से नीच जाति के व्यक्ति से बना दीजिए ऐसे महान विचारवान गुरु नानक देव जी के हृदय में गरीब और नीच के प्रति उदार भाव थे अंजील में भी इस प्रकार के कथन का उल्लेख है जिसका अंग्रेजी भाषा में अनुवाद निम्नवत है:-

"But God chose the foolish things of the world, that he might put to shame them that are wise, and God chose the weak things of the world that he might put to shame the things that are strong."

इन्हीं विचारों से ओतप्रोत गुरु नानक देव जी ने मरदाना जी को अपना शिष्य बनाया।

मरदाना जी का गृहस्थ जीवन:- मरदाना जी के गृहस्थ जीवन के संबंध में ऐतिहासिक पुष्टि तो नहीं होती तथापि यह माना जाता है की मरदाना जी का विवाह हुआ था और इनकी पत्नी का नाम बीबी रख्खी था। जिन के 2 पुत्र सजादा एवं रजादा थे।

एस. एम. लतीफ का कथन है कि "भाई मरदाना के पुत्र सजादा ने अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् गुरु नानक देव जी की यात्राओं में उनका साथ दिया। यह भी रबाब वादन में दक्ष थे।" भाई मरदाना बड़े भाग्य वाला श्रोता था साज एवं आवाज का धनी एवं हिम्मत का मजसमा था।

मरदाना जी की शिक्षा:- भले ही मरदाना जी गुरु नानक देव जी के बचपन के मित्र थे लेकिन आयु में 10 वर्ष बड़े थे परंतु गुरु नानक देव जी को अपना गुरु मानते थे। गुरु से प्राप्त शिक्षा के अनुरूप मरदाना जी ने परमपिता परमात्मा के समक्ष तन मन अर्पित किया। गुरु जी ने मरदाना जी को अहंकार त्यागना, सच्चे हृदय से प्रभु बंदगी, कीरत करो, नाम जपो, वंड छको, सदा गुरु की सेवा आदि की शिक्षा दी। इसके साथ ही साथ मरदाना जी से कहा बाल नहीं कटाने, नाम जपना, कीरत करना और वंड कर छकना की शिक्षा दी जो मानवता का धर्म है। मरदाना ने कहा हे गुरु आपकी कृपा दृष्टि से ही मैं आपका सिख बन सकता हूं इस प्रकार मरदाना जी गुरु नानक देव जी के शिष्य बन गए।

मरदाना को रबाब देने एवं रबाब वादन में निपुण करना:- गुरु नानक देव जी ने मरदाने को आदेश दिया कि मरदाने एक हिंदू मिरासी जिसका नाम फरिंदा है से रबाब ले आओ। जब मरदाना जी ने रबाब लेने के लिए फरिंदे के पास पहुंचकर गुरु नानक देव जी के आदेश से अवगत कराते हुए रबाब मांगी तो फरिंदा जो गुरु का भक्त था स्वयं रबाब लेकर गुरु नानक देव जी के पास पहुंचा और गुरु नानक देव जी को अपने द्वारा बनाई रबाब भेंट की। गुरु नानक देव जी ने यह रबाब मरदाना जी को दी। "गुरु नानक साहिब ने भाई मरदाना को अपना संगी चुनते समय गायन के साथ ही साथ उसकी वादन कला को भी अपनी मेहर कृपा का पात्र बनाया एवं भैरोआड़ा के भाई फरिंदा (भाई फेरू) से विशेष प्रकार की रबाब तैयार करवाई।"

रबाब गुरमत संगीत का प्रथम वाद्य है जिसे गुरु नानक देव जी के शबद गायन के समय भाई मरदाना जी बजाते थे। उस खालक द्वारा विकसित किए गए सच्चे शबद गुरबाणी को शबद कीर्तन के रूप में प्रभु के सत्य संदेश का वाहक बनकर संसार में प्रसारित किया। जहां भी गुरु नानक जाते मरदाना उनके साथ जाते और गुरु नानक देव जी आदेश देते कि मरदानया धुर तो बाणी आई है तार छेड़। गुरु नानक देव जी प्रभु की बाणी गाते और मरदाना जी उनके साथ रबाब बजाकर संगत करते और कीर्तन गाते।

मरदाना जी को गुरु जी ने बताया कि गुरबाणी एवं संगीत प्रभु की कृपा से प्राप्त होता है इसे सीखने के लिए प्रभु की सेवा, भक्ति, समर्पण, श्रद्धा के साथ ही साथ सावधानी की आवश्यकता है। गुरबाणी कीर्तन हमेशा रागबद्ध होना चाहिए परंतु उसमें इस बात का ध्यान रखना है कि गुरबाणी कीर्तन में शबद प्रधानता है राग केवल सहयोग मात्र है। इस प्रकार की शिक्षा से मरदाना जो एक अच्छा संगीतकार था में गुरु नानक देव जी की कृपा दृष्टि से कीर्तन गायन एवं संगीत कला का पूर्ण प्रकाश हो गया और मरदाना गुरु जी के साथ बैठकर घंटों कीर्तन करता और रबाब बजाता।

मरदाना जी का गुरु नानक देव जी के साथ उदासियों (धार्मिक यात्राओं) में जाना:- मरदाना जी प्रतिदिन गुरु नानक देव जी के साथ सेई नदी में स्नान को जाते थे। एक दिन गुरु नानक देव जी ने अपने वस्त्र उतारकर मरदाना को देकर नदी में डुबकी लगाई और परमात्मा के चरणों में पहुंचे। परमात्मा ने कहा, जगत को प्रभु सिमरन की शिक्षा दो। गुरु नानक देव जी प्रभु से दीक्षा लेकर 3 दिन बाद सेई नदी से बाहर निकले। गुरु नानक देव जी ने मरदाने से कहा प्रभु ने मुझे ढाढी बनाकर इस संसार में भेजा है और मैंने तुम्हें रबाब बजाने, प्रभु कीर्तन करने, गुरमत संगीत के गुण एवं शबद गुरबाणी का ज्ञान दिया है अब तू ग्रह जीवन त्यागकर (पारिवारिक जीवन को छोड़कर) सांसारिक लोगों को प्रभु भक्ति के लिए प्रेरित कर। इस मार्ग में अनेक कठिनाइयां भी होंगी। मरदाने ने कहा, बाबा अब मैं तेरा हो गया हूं। तू प्रभु का डूम और मैं तेरा डूम अर्थात् तू प्रभु का सेवक मैं तेरा सेवक। तुम्हें छोड़कर अब कहां जाना है मुझे तो अब कोई रास्ता नहीं सूझ रहा, बाबा तूने मुझे नया जीवन दिया है। जब मरदाना गुरु नानक देव जी के साथ जाने को तैयार हो गया तो गुरु नानक देव जी ने कहा जा अपने घरवालों से मिल आ और उन्हें सारी बात बता दें। मरदाना ने घर जाकर परिवार को सारी वार्ता कह सुनाई और गुरु नानक देव जी के उदासियों (धार्मिक यात्राओं) में उनका संगीतकार, सेवक, सहयोगी बनकर चल पड़े भाई गुरदास जी का कथन है-

भाई गुरदास जी वार १, पउड़ी २४

बाबे भेख बणाइआ उदासी की रीति चलाई ॥

चड़िहआ सोधणि धरति लुकाई ॥२४॥

अर्थात् उदासी जीवन धारण कर गुरु नानक देव जी संसार के लोगों को प्रभु बाणी के कीर्तन के माध्यम से शिक्षा देने के लिए निकल पड़े।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

सच्चा दोस्त:- सिख धर्म के इतिहास पर यदि विचार किया जाए तो जहां गुरु नानक देव जी को सिख धर्म का संस्थापक माना जाता है वही मरदाना जी को गुरमत संगीत की नीव की ईट माना जाता है ऐसा हो भी क्यों न, वह तो नानक का मित्र बनने संसार में आए थे और अपनी रबाब के माध्यम से गुरबाणी कीर्तन की झंकार से लोगों को जगाने आए थे। भाई गुरदास जी मरदाने की रबाब वादन की प्रशंसा करते हुए लिखते हैं :-

भाई गुरदास जी वार १, पउड़ी ३५

इक बाबा अकाल रूपु दूजा रबाबी मरदाना ॥

साधारण रूप में देखा जाए तो मरदाना जी को गुरु नानक देव जी ने संगीतकार रबाबी के रूप में चुना परंतु वह तो निकटवर्ती साथी अनन्य भक्त सेवक एवं गुरु जी का प्रथम सिख था। यहां यह उल्लेख करना संदर्भ गत होगा कि मरदाना ही गुरबाणी का प्रथम श्रोता एवं प्रथम वादक भी था। डॉ बलबीर सिंह के शब्दों में "मरदाना संकेत है उस हुनर का जिसने कलयुग पर फतेह प्राप्त करनी है।" वह प्रथम व्यक्ति था जिसका मन गुरु ने स्वर ब्रह्म के साथ विभूषित कर दिया था मरदाना सेवक था, सिख था, चेला था, रागी था, रबाबी था, पर जो कुछ भी था वह इस बात का गर्व अवश्य रखता था कि वह गुरु का दोस्त है।" उदासियों के अंतर्गत गुरु नानक देव जी मरदाना जी की महत्ता को भी दर्शाते हैं।

मरदानिआ सबदु चिति करि, तऊ बाझहु

बाणी सरि नाही आवदी, मरदानिआ रबाब वजाइ।।

इस प्रकार सिद्ध होता है कि संगीत का आधार मरदाना तथा मरदाना जी की रबाब ही है जिसे गुरु नानक देव जी ने भी शबद बाणी गुरु कीर्तन में आवश्यक माना। भारतीय परंपरा अनुसार संगीत को महत्व अवश्य दिया गया परंतु संगीत और राग शबद कीर्तन की तुलना में कीर्तन मुख्य स्थान पर रहा और राग संगीत का स्थान गौण रहा इस विचार से अवगत होते हुए मरदाना जी ने हमेशा रबाब का स्वर मीठा एवं गुरु के कंठ से निकली बाणी के अनुरूप ही रखा जिसमें प्रदर्शन का कोई स्थान नहीं था।

"मरदाना रबाब बजाने में निपुण था। रबाब के सुरों पर गुरु जी और मरदाना हरि कीर्तन करते और श्रोताओं को आत्म विभोर कर देते।" अनहद जिसका अंत न पाया जा सके, प्रभु की बाणी अनहद बाणी, गुरु नानक देव जी के कंठ निकली अनहद ध्वनि, मरदाने की राग से निकली झंकार और मरदाने जैसा अनहद सेवक गुरमत संगीत के स्तंभ माने जाते हैं।

जीवन यात्रा का अंत:- गुरु नानक देव जी के महान शिष्य गुरमत संगीत के अद्वितीय कीर्तनकार एवं संगीतकार भाई मरदाना जी के देहांत के बारे में विद्वान एकमत नहीं है। मरदाना हिंदु था या मुसलमान पर गुरु नानक देव जी के संगत में रहकर सिख धर्म का पहला सिख था जिसके अंतिम समय में गुरु नानक देव जी ने पूछा कि उसका अंतिम संस्कार किस रिवाज से किया जाए। मरदाना जी ने कहा मरदाना तो गुरु का हो चुका है सांसारिक भेदभाव की भावना से ऊपर उसकी भावना आध्यात्मिक हो चुकी है शरीर तो पंचतत्व का ताल है और आत्मा केवल शरीर का साथी है साथ छोड़ देती है जिस विधि से चाहे आपकी इच्छा।

मृत्यु स्थल:- मरदाना जी की मृत्यु के संबंध में गुरु नानक देव जी के साथ यात्राएं करते हुए जब मरदाना अफगानिस्तान पहुंचे तो वहीं पर उसने गुरु की गोद में अंतिम सांस ली। कबीर जी का कथन है मरता तो सारा संसार ही है पर मरने का मरम केवल महान आत्मा ही जान सकती है।

बिहागड़ा, भगत कबीर जी

सलोक ॥ कबीरा मरता मरता जगु मुआ मरि भि न जानै कोइ ॥ ऐसी मरनी जो मरै बहुरि न मरना होइ ॥१॥

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

मरदाना गुरु नानक देव जी का प्रथम रबाबी शिष्य, दोस्त ही नहीं था अपितु गुरु अर्जुन देव जी ने मरदाने की बाणी को श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित कर मरदाना जी को को गुरुओं और भक्तों के समान सम्मान प्रदान किया। आज जो भी गुरु नानक नाम लेवा गुरु ग्रंथ साहिब जी को माथा टेकता है वह गुरमत संगीत के महान संगीताचार्य मरदाना जी के प्रति समर्पित होकर श्रद्धा भाव से माथा टेकता है।

निष्कर्ष

परमपिता परमात्मा से प्राप्त बाणी का गायन करने वाले सिख धर्म एवं गुरमत संगीत के संस्थापक गुरु नानक देव जी और गुरमत संगीत के महान संगीताचार्य भाई मरदाना जी का जन्म एक ही स्थान ननकाना साहिब में होना आलौकिक दृष्टि से जहां रहस्यमई है वही भक्ति भाव से ओतप्रोत है इसे गुरु शिष्य की मित्रता "कलजुग महि कीरतनु परधाना॥" के संदेश से मात्र लोग में अज्ञानता के अंधकार को ज्ञान के प्रकाश में ऐसा विभूषित किया कि घर-घर में संगीतमय कीर्तन की प्रथा वर्तमान में संचालित हो रही है। मरदाना जी बचपन से ही गुरु नानक देव जी के प्रिय शिष्य रहे जो गुरु नानक देव जी से 10 वर्ष बड़े थे परंतु अपने गुरु को हमेशा सम्मानित करते थे मरदाना जी गुरु नानक देव जी के शिष्य बने, ग्रह परिवार छोड़कर चार उदासियों (यात्रा) में गुरु नानक देव जी के साथ रहकर गुरबाणी कीर्तन ही नहीं किया अपितु गुरु नानक देव जी की कंठ बाणी के अनुरूप रबाब बजाकर गुरमत संगीत को स्थाई रूप प्रदान किया जो आज विश्व में कीर्तन की प्रथा को निरंतरता प्रदान कर रहा है।

संदर्भ ग्रंथ

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी
वादन कला, प्रोफेसर तारा सिंह, सुरजीत कौर, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी युनिवर्सिटी, पटियाला 2004
श्री गुरु नानक चमत्कार, पुरबारध (vol-1) भाई साहिब भाई वीर सिंह, प्रकाशक-भाई वीर सिंह साहित्य सदन, भाई वीर सिंह मार्ग, नई दिल्ली, 22वीं वार, जून 2011
गुरमत संगीत प्रबन्ध ते पासार, गुरनाम सिंह (डॉ०), पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी युनिवर्सिटी, पटियाला 2012
गुरमत संगीत पर हुण तक मिली खोज (भाग इक तों पंज),प्रकाशक, चीफ खालसा दीवान, अमृतसर,1958
History of the Panjab, S. M. Latif, Sang-e-Meel Publications, 1997
गुरु शबद रत्नाकर महान कोश, कान्ह सिंह नाभा, लाहौर बुक शॉप, 2018